नीरा की जीवनावधि में बढ़ोतरी

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला ने नीरा की जीवनावधि को बढ़ाने के लिए एक प्रक्रिया विकसित की है । नीरा एक पारम्परिक ग्रामीण पेय पदार्थ है जो पनई ताड़, साबूदाना या खजूर के रस से तैयार किया जाता है । भारत में पाए जाने वाले लगभग 17 करोड़ ताड़ और खजूर के वृक्षों में से केवल 35 प्रतिशत से ही नीरा तैयार किया जाता है । 70 प्रतिशत से अधिक वृक्ष इस कार्य हेतु प्रयोग में नहीं लाए जाते हैं ।

नीरा एक पोषक पेय पदार्थ है जिसकी जीवनावधि केवल कुछ घंटों की होती है । इसीलिए इसका समुद्रतटीय क्षेत्रों में जहाँ उत्पादन होता है, वहीं उसके आसपास के सीमित क्षेत्र में ही इसका उपभोग शीघ्रता से कर लिया जाता है । यदि नीरा को अत्यधिक ठंडे तापमान में न रखा जाए तो इसके उत्पादन के कुछ घण्टों के अन्दर ही बैक्टीरिया और खमीर (यीस्ट) इस पर किण्वन की प्रतिक्रिया करके इसे ताड़ी में परिवर्तित कर देते हैं । एनसीएल में विकसित की गई झिल्ली निस्यन्दन तकनीक से नीरा में उपस्थित सूक्ष्म जीवाणुओं को दूर कर दिया जाता है । इस तकनीक से उसकी गुणवत्ता में भी कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है । इस तकनीकी के प्रयोग द्वारा नीरा की जीवनावधि में बढ़ोतरी संभव हो सकी है । इस स्थिति में यदि इसे 4 से 8 डिग्री सेल्सियस के तापमान में रखा जाए तो यह 45 दिनों तक उपयोग में लाया जा सकता है ।

एनसीएल ने महाराष्ट्र के ठाणे जिले स्थित डहाणु में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के गजानन नाइक बहुविधात्मक प्रशिक्षण केन्द्र में एक प्रायोगिक संयंत्र स्थापित किया है । इस संयंत्र में 500 लीटर तक नीरा प्रतिदिन शोधित करने की क्षमता है । इस संयंत्र की स्थापना 3 मई, 2008 को की गई थी । प्रतिदिन लगभग 1500 पाउच जिनमें 200 मिलीलीटर नीरा भरा होता है, तैयार करके डहाणु में खादी एवं ग्रामोद्योग की फुटकर दुकानों में भेजा जाता है । इसकी बिक्री काफी हो रही है । यह उत्पाद उपयुक्त प्रौद्योगिकी के माध्यम से ग्रामीण पेय पदार्थ की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में की गई नई पहल का प्रतिनिधित्व करता है ।

गुजरात नीरा फेडरेशन ने जैवप्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली तथा खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग की सहायता से एनसीएल द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी पर आधारित एक दूसरे प्रायोगिक संयंत्र की स्थापना 14 मई, 2008 को की है । इस संयंत्र में प्रतिदिन 3000 लीटर नीरा शोधित करने की क्षमता है । नीरा को 20 लीटर के पैक में सफलतापूर्वक बाजार में लाया गया है । इस संयंत्र की क्षमता को प्रतिदिन 10,000 लीटर तक बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है ।

नीरा को झिल्ली प्रक्रिया द्वारा शोधित करने से उत्पाद में 15 से 20 प्रतिशत की कुल बचत होती है । इससे नीरा उत्पादकों की आय में वृद्धि होगी । गुजरात नीरा फेडरेशन का यह आकलन है कि वर्तमान नीरा शोधन संयंत्र के कारण आगामी उत्पादन-समय में लगभग 1200 अतिरिक्त लोगों को काम मिलेगा । इस प्रौद्योगिकी से सारे देश में फैले खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के कम से कम 14 और केन्द्रों को लाभ मिलेगा ।

एनसीएल तथा एसएनडीटी विश्वविद्यालय, मुम्बई में किए गए विश्लेषणों से यह सिद्ध होता है कि नीरा एक अत्यन्त पोषक पेय पदार्थ है और इसका उपयोग किशोरावस्था के बच्चे तथा भावी माताएँ कर सकती हैं ।

- - -